Aksharabrahma Virat SvarupaM

अक्षरब्रह्मस्य विराड्स्वरुपम्

Document Information

Text title : AksharabrahmasvarUpa from Maheshvaratantra

File name : akSharabrahmasvarUpamAheshvaratantra.itx

Category : misc

Location : doc_z_misc_general

Transliterated by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Proofread by : Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

Translated by : Sudhakar Malaviya

Description/comments : Maheshwara Tantra Jnanakhanda prathama paTalaM Verses 48-67

Latest update : May 27, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

September 16, 2023

sanskritdocuments.org

अक्षरब्रह्मस्य विराड्स्वरुपम्

माहेश्वरतन्त्रे ज्ञान खण्डे अक्षरब्रह्मस्य विराड्स्वरुपं
अक्षरब्रह्म का विराट् स्वरूप

विराट तस्य वपुः स्थूलं पञ्चधा तु समुद्भवम् ।
पातालं पादमूलेऽस्य पार्ष्णिदेशे रसातलम् ॥ १॥

उसका शरीर विराट् और स्थूल है जो पाँच गुना करके समुद्भूत है ।
उस विराट पुरुषके पैरके तलवेमें पाताल है, एड़ियाँ और (पंजे)
रसातल हैं ॥ १ ॥

गुल्फे महातलं तस्य जङ्घयोश्च तलातलम् ।
जङ्घयोपरि सुतलं वितलं कट्युत्तरं प्रिये ॥ २॥

कटिमध्येऽतलमस्ति मर्त्यलोकोदरे तथा ।
पार्श्वदेशेभुवर्लोकस्तदूर्ध्वं च स्वरादयः ॥ ३॥

गुल्फ (एड़ीकी ऊपरकी गाँठों में) महातल उसकी जाँघों (पिंडली)
में तलातल है । जङ्घाओंके ऊपर सुतल और हे प्रिये ! कटिके उत्तरमें
वितल है । कटिके मध्यमें अतल और उदरमें मर्त्यलोक है । पीठमें
भुवर्लोक है और उसके ऊपर 'स्वः' आदि लोक हैं ॥ २-३ ॥

ज्योर्तीष्यस्योरःस्थले च ग्रीवायां च महस्तथा ॥ ४॥

इसके वक्षस्थलमें स्वर्गलोक एवं ग्रीवामें महर्लोक हैं ॥ ४ ॥

वदने जनलोकोऽस्य तपोलोको ललाटके ।
सत्यलोको ब्रह्मरन्ध्रे बाह्वोरिन्द्रादयः सुराः ॥ ५॥

मुखमें जन लोक है और इनके ललाटमें तपोलोक है । इन विराट् पुरुषके
ब्रह्मरन्ध्रमें (शिरमें शिखाके पास जो 'ब्रह्मरन्ध्र' नामक महीन
सा छिन्द्र होता है उसमें) सत्यलोक है । इन्द्र आदि देवता इनकी भुजाएँ

हैं ॥ ५ ॥

दिशः कर्णप्रदेशस्य शब्दस्तच्छ्रोत्रमध्यगः ।
नासयोरस्य नासत्यौ मुखे वह्निः समाश्रितः ॥ ६॥

दिशाएं कान हैं । शब्द श्रोत्रेन्द्रिय है । इनकी दोनों नासाओंमें
नासत्या-द्वय हैं और इनका मुख अग्नि है ॥ ६ ॥

सूर्योऽस्य चक्षुषि गतः पक्ष्मणि ह्यहनीशितुः ।
दंष्ट्रायां यमस्तस्य हास्ये माया महेश्वरि ॥ ७॥

इनकी आखें सूर्य हैं । रात और दिन इन प्रभुकी दोनों पलकें हैं ।
दंष्ट्रा (दाँतों) में यमराज हैं । हे महेश्वरि ! उनकी मधुर मुस्कान
ही माया है ॥ ७ ॥

उत्तरोष्ठे स्थिता लज्जा लोभः स्यादधरोष्ठके ।
स्तनयोरस्य वै धर्मः पृष्ठेऽधर्मः समाश्रितः ॥ ८॥

लज्जा ऊपरके ओष्ठ और नीचेके ओष्ठ लोभ हैं । इनके दोनों स्तनोंमें
धर्म और पृष्ठ भागमें अधर्म आश्रय करके रहता है ॥ ८ ॥

कुक्षिष्वस्य समुद्रा वै पर्वता ह्यस्थिसन्धिषु ॥

आपगा नाडिदेशस्था वृक्षा रोमपथि स्थिताः ॥ ९॥

इनकी कुक्षि समुद्र है इनके अस्थिकी सन्धियाँ अर्थात् जोड़ पर्वत हैं ।
नाड़ी प्रदेश नदियाँ हैं । रोमोंके पथ वृक्ष हैं ॥ ९ ॥

मेघाः केशेषु हृदये चन्द्रमाः परिकीर्तितः ।
इदं स्थूलशरीरं तु ब्रह्मणः परमात्मनः ॥ १०॥

केशोंमें मेघ हैं और हृदयमें चन्द्रमा कहे गये हैं । इस प्रकार
विराट् पुरुष परब्रह्म परमात्मा का यह विशालकाय शरीर है ॥ १० ॥

इयत्तयाऽपरिच्छेद्यमन्तपारविवर्जितम् ।
लिङ्गं नारायणस्तस्य ह्यक्षरस्य चिदात्मनः ॥ ११॥

उस चिदात्मा अक्षररूप ब्रह्म का यह शरीर आदि और अन्त से रहित है
एवं वही लिङ्ग है और वही नारायण है ॥ ११ ॥

हिरण्यगर्भं जगदीशितारं नारायणं यं प्रवदन्ति सन्तः ।

सर्वस्य धातारमनन्तमाद्यं प्रधानपुंसोरपि हेतुमीशम् ॥ १२॥

उसी विराट् पुरुष को सन्त लोग हिरण्यगर्भ, जगत्के ईश और नारायणके रूपमें कहा करते हैं । वह सभीकी सृष्टि करने वाले हैं, वह अनन्त हैं, प्रधान पुरुष से भी आद्य हैं । वह ईशके भी कारण हैं ॥ १२ ॥

तं सर्वकालावयवं पुराणं परात्परं योगिभिरीड्यपादम् ।
ब्रह्मेशविष्णुप्रमुखैकहेतुं यतः प्रवृत्तो निगमस्य पन्थाः ॥ १३॥

उन सभी कालोंके अवयव, पुराण पुरुष एवं परात्पर ब्रह्मके पैर योगियों द्वारा स्तुत हैं । वही विराट् पुरुष ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश आदि प्रमुख देवोंके भी कारण हैं तथा इन्हींसे वेद भी निकले हैं ॥ १३ ॥

तं देवदेवं जगतां शरण्यं नारायणं यस्य वदन्ति लिङ्गम् ।
यावन्न लिङ्गं प्रलयं प्रयाति स्थूलं वपुश्चापि न शान्तिमेति ॥ १४॥

उन देवोंके भी देव, जगत् को शरण प्रदान करने वाले, नारायण रूप जिस लिङ्ग (शरीर) की विद्वज्जन स्तुति किया करते हैं । जब तक उस विराट पुरुष का लिङ्ग शरीर प्रलय को प्राप्त नहीं होता तब तक उनका स्थूल शरीर भी शान्ति को नहीं प्राप्त करता है ॥ १४ ॥

ततः परं कारणमेव तस्य वपुः परस्यात्मन एव मोहः ।
यावद्विमोहः प्रशमं न याति न लिङ्गमुत्सीदति कार्यबद्धम् ॥ १५॥

जब तक उसका कारण रूप शरीर विद्यमान होता है तब तक मोह रहता है । और जब तक मोह का नाश नहीं होता तब तक कार्य से आबद्ध लिङ्ग शरीर का मोक्ष भी नहीं होता है ॥ १५ ॥

न कारणं तावदुपैति शान्तिं चराचरस्यापि च बीजभूतम् ।
यावन्महाकारणमम्बिके तत् न शान्तिमायाति च बीजबीजम् ॥ १६॥

चराचर जगत् का बीजभूत (विराट्पुरुषरूप) कारण भी तब तक शान्ति को नहीं प्राप्त करता है, हे अम्बिके ! जब तक बीज का भी बीजभूत महाकारण शान्ति को नहीं प्राप्त करता है ॥ १६ ॥

गुह्याद् गुह्यतरं शास्त्रमिदमुक्तं तवानघे ।
न कस्याप्यग्रतो वाच्यं सत्यं सत्यं प्रियंवदे ॥ १७॥

हे अनघे (निष्पाप) ! इस प्रकार गुह्य से भी गुह्यतर इस रहस्य युक्त

शास्त्र को मैंने तुमसे कहा । हे प्रियवादिनि ! इसे सच सच (यथावत्)
किसीके समक्ष नहीं कहना चाहिए ॥ १७ ॥

न पद्मायै हरिः प्राह प्रार्थितोऽपि पुनः पुनः ।
तन्मयात्र तव स्नेहात्प्रकटीकृतमुच्चकैः ॥ १८॥

बारम्बार प्रार्थना करने पर भी भगवान विष्णु ने इस रहस्य को लक्ष्मी से नहीं कहा । उस रहस्य को मैंने तुम्हें स्नेह से प्रकट कर दिया ॥ १८ ॥

न गुह्यायापि पुत्राय गणराजाय नन्दिने ।
सुगोपितमिदं भद्रे तव स्नेहादुदीरितम् ॥ १९॥

गणराज, रहस्य का गोपन करने वाले, पुत्र नन्दी से भी इसे मैंने छिपा रखा था जिसे, हे भद्रे ! तुम्हारे स्नेहके कारण, मैंने तुमसे कहा है ॥ १९ ॥

तस्माद्गोप्यतरं भद्रे वराङ्गमिव सर्वतः ।
इतीदं ते समाख्यातं किमन्यत्प्रष्टुमिच्छसि ॥ २०॥

इसलिए यह उसी तरह चारों ओर से गोपनीय है जैसे वराङ्गों (गोपनीय अंगो) का चारों ओर से गोपन किया जाता है । इस प्रकार तुमसे यह सब विषय अच्छे प्रकार से मैंने कह दिया है । अब और तुम क्या पूछना चाहती हो ?॥ २० ॥

इति श्रीनारदपञ्चरात्रे माहेश्वरतन्त्रे ज्ञानखण्डे
अक्षरब्रह्मस्य विराड्रूपवर्णनं सम्पूर्णम् ।

Verses 48-67 from Maheshvaratantra Jnanakhanda prathama paTalaM

Encoded and proofread by Yogesh K Sharma yosharma at gmail.com

---

Aksharabrahma Virat SvarupaM

pdf was typeset on September 16, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*